R.N.I. UPBIL 04509/15/01/2015 ISSN 2454-5902

वर्ष 3 अंक 2 दिसम्बर 2017 Year 3 Vol. 2 December 2017

शोध सिन्धु

अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार सिंह
प्रधान सम्पादक

डॉ0 अनीता सिंह
सम्पादक

डॉ0 मुकेश कुमार मिश्र
सह सम्पादक

SHODH SINDHU

Half Yearly Research Journal

वनानी दहतो वन्हेः सखा भवति मारूतः ।
स एवं दीपनाशाय कशे कस्यास्ति सौदृदम ।।
- सुभाषितानि

Scanned with CamScanner

R.N.I. UPBIL 04509/15/01/2015 ISSN 2454-5902

वर्ष 3 अंक 2 दिसम्बर 2017 Year 3 Vol. 2 December 2017

शोध सिन्धु

अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

SHODH SINDHU

Half Yearly Research Journal

सेवा में डॉ. सुषमा जी को सादर भेंट
मुकेश मिश्र
9670193594

सम्पादक
डॉ0 अनीता सिंह
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
कर्मा देवी स्मृति महाविद्यालय
संसारपुर, फुटहिया-बस्ती (उ.प्र.)

सह सम्पादक
डॉ0 मुकेश कुमार मिश्र
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
राजा कान्ह पी0जी0 कालेज
जगेसरगंज, अमेठी (उ0प्र0)

सम्पादक मण्डल

- डॉ0 सत्येन्द्र कुमार मिश्र, प्रवक्ता, शिक्षा शास्त्र, इन्दिरा गाँधी पी.जी. कालेज, गौरीगंज, अमेठी (उ.प्र.)
- डॉ0 वीरेन्द्र प्रताप, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महिला पी.जी. कालेज, हरैया-बस्ती (उ.प्र.)
- डॉ0 अरविन्द कुमार सिंह, शिव सावित्री महाविद्यालय, ऐहार रूदौली, फैजाबाद (उ.प्र.)
- डॉ0 विपिन कुमार सिंह, प्राचार्य, चौधरी कर्पूरीराम कालेज ऑफ एजुकेशन, महावटी, पानीपत-(हरियाणा)
- श्री पवन कुमार गुप्ता, सद्दतपुरा, मऊ (उ.प्र.)

Scanned with CamScanner

समय का सच बयान करती बुढ़ापा
डॉ. सुप्रिया पी, सहायक आचार्य, हिंदी एवं तुलनात्मक भाषा विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, पोस्ट विद्यानगर, कासरगोड, केरल– 671123

महिला सशक्तीकरण : जीवन का, जीवन के लिए संघर्ष
डॉ0 विनिता सिंह, असि0 प्रो0, राजनीतिशास्त्र विभाग, बाबा मोहन सिंह स्मारक माहविद्यालय, बैजनाथपुर, सन्तकबीर नगर (उ0प्र0)

मानव का भौतिक विकास एवं पर्यावरण
प्रो0 गोपाल प्रसाद, आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दी0द0उ0गो0वि0वि0, गोरखपुर (उ0प्र0)
प्रवीन पाल, शोध छात्र (UGC-NET-JRF) राजनीति विज्ञान, विभाग, दी0द0उ0गो0वि0वि0, गोरखपुर (उ0प्र0)

बंकिम की राष्ट्रीय चेतना
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, एस0आर0एम0 इन्स्टीट्यूट ऑफ साइन्स एण्ड टेक्नॉलाजी, चेन्नई, तमिलनाडु

'नरेन्द्र कोहली' के उपन्यासों में चित्रित नारी स्वतंत्रता की सार्वकालिक समस्याएँ
अमित कुमार दीक्षित, उच्च शिक्षा शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, टी नगर, मद्रास

Emotional Intelligence of Physically Challenged Students in Relation To Their Family Environment
Dr. Omparkash Geeta College of Education, Nimbari Panipat, Haryana.
Yogesh Madan, Research scholar, DBHPS, MADRAS Regd :- 15041723

A Study of Academic Achievement in English of 12th Class Student in Relation to Achievement Motivation
Monika, Ph.d.Student (DBHBS MADRAS)

काव्य समीक्षा / "क्या तुम्हें भी होता है कुछ"
डॉ0 मुकेश कुमार मिश्र, अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, राजा कान्ह पी0जी0 कालेज, जगेसरगंज अमेठी (उ0प्र0)

हिन्दी भाषा एवं साहित्य का एक महाकुम्भ – एक रिपोर्ट
डॉ0. सूफिया यास्मीन, हिन्दी विभाग, ऋषि बंकिमचन्द्र फार ओमेन्स कॉलेज, कोलकोता पश्चिम बंगाल
श्रीमती सुबाशनी लता, हिन्दी विभाग, फीजी ओपन विश्वविद्यालय सूवा, फीजी
डॉ0. रवि कुमार, हिन्दी, उस्मानियां विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना
डॉ0. श्रीधर हेगड़े, हिन्दी विभाग, एफ0एम0के0एम0 करियप्पा कॉलेज मड़केरी कर्नाटका
डॉ0. जितेन्द्र कुमार सिंह, हिन्दी विभाग, केन्द्रीय विश्विद्यालय अजमेर, राजस्थान
डॉ0. मुकेश कुमार मिश्र, हिन्दी विभाग, राजा कान्ह पी0जी0 कॉलेज जगेसरगंज, अमेठी (उ0प्र0)

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह 18, 19 अक्टूबर 2018 (सूचनार्थ / प्रकाशन)

Scanned with CamScanner

शोध सिन्धु
वर्ष 3, अंक 2, दिसम्बर 2017

R.N.I. UPBIL 04509/15/01/2016
ISSN 2454-6902

समय का सच बयान करती बुढ़ापा

डॉ. सुप्रिया पी.*

21वीं सदी के आरंभ से कहानियों में वृद्धावस्था का चित्रण होने लगा। आज यह विमर्श का एक नया दायरा लेकर साहित्य जगत में स्थापित हो गया है। बुढ़ापा एक ऐसा समय है जब व्यक्ति को यह एहसास होने लगता है कि 'जो है वो वैसा नहीं हैं'। यह एहसास उनमें तनाव और मोहभंग पैदा करता है। समय के तेजी से परिवर्तन ने सामाजिक जीवन को प्रभावित किया और मनुष्य स्वार्थ के पुंज में बदलने लगा। साहित्य में बुढ़ापे की कहानियों के दो प्रकार मिलते हैं . प्रगति की कहानी (Story of progress) और पतन की कहानी (Story of decline)। साहित्यकार कभी बुढ़ापे को विलाप बना देता हैं, तो कभी उत्सव। जबकि बुढ़ापे को 'जीवन का महत्वपूर्ण अंग स्वीकार करना चाहिए' और उस रूप में उसे चित्रित करना चाहिए। फारसी साहित्य के कवि जलालुद्दीन रूमी ने कहा है . "The Caravan of life] or succession of generations from young to old] is actually a pil-grimage of sleepwalkers" अस्तित्ववादी दार्शनिक सिमोन द बुआ बुढ़ापे को सहजता के साथ स्वीकारने को कहती है ."It"s a commonplace eÛperience that nobody should behave as though uniquely afflicted"

वृद्धों के जीवन को आधार बनाकर कहानी लिखने की परंपरा प्रेमचंद के 'बूढ़ी काकी' से शुरू होती है। इसी कड़ी में उषा प्रियंवदा की 'वापसी', भीष्म साहनी का 'चीफ की दावत', निर्मल वर्मा की 'बीच बहस में' जैसी कहानियाँ हैं। यहाँ अध्ययन के लिए पिछले दशक की तीन कहानियाँ चुनी हैं। आधुनिक जीवन में मानव निर्मित समाज में किस प्रकार से मूल्यों में बदलाव आ रहा है, नई पीढ़ी का वृद्धों के प्रति उपेक्षा और उदासीनता, अपनों के बीच पराये हो जाने की विडंबना, मानव मूल्यों के अकाल की और इशारा करती ये कहानियाँ निश्चित ही पाठक के दिल को हिला देती है।

हरी भटनागर की कहानी 'मेज कुर्सी तख्ता टाट...' में अपने ही घर में अनुपयोगी हो कचरे की तरह फेंक देने की प्रवृति देख सकते है। बूढ़ा खलील अपने ही घर में वजूद खो कर टाट बन कर रह जाता है। खलील का बेटा जलील पहले बाप के प्रति हमदर्दी रखता था। खलील के अस्वस्थ होने पर वह पूरा ख्याल रखकर बाप के प्रति अपना फर्ज निभाता है। कर्ज और उधार के बढ़ने, रोटी की हाय होने पर जलील में कड़वाहट और गुस्सा पनपने लगा। बाप को फूटी आँख देखना पसंद न करता, बोलने पर खौखिया पड़ता। मानवीयता का लोप होने से ही पिता घर में टाट बन कर रह जाता है। स्नेह और सहानुभूति कुछ दिनों में विलीन हो व्यवहारिकता उस पर कब्जा कर लेती है।

जलील रोज रात रोटी का पुड़ा लाता और बाप खलील पर फेंक देता। खलील को लगता मानो वह रोटी का पुड़ा नहीं, कूड़े का पुड़ा हो। पहले तो वह न खाने की कसमें खाता है लेकिन जल्द ही 'भूख' में सारी कसमें बातें भूल जाता। खलील को यह एहसास खटकने लगा "वह वजूद खो चुका है तभी जलील ने ऐसा किया। बेवजूद होने की वजह से ही वह रोटी का पुड़ा नहीं, कूड़े का पुड़ा फेंकता है! वह भी उस पर कूड़ेदान पर।"[1] निराशा, शिकायत और बेवजूद होने की पीड़ा लिए जीने में वह बाध्य है। "समाज में जब तक व्यक्ति का योगदान रहा, तब तक वह समाज का अभिन्न अंग बना रहा और जैसे ही बूढ़ा हो गया, वह समाज से काट गया और केवल एक 'वस्तु' बन रह गया ऐसी वस्तु जिसका न कोई मोल है, जो न किसी काम की है और न ही कुछ पैदा कर सकने योग्य।"[2]

अपनी प्रेमिका को लेकर एक दिन जलील घर आता है, एक कोठरी के उस मकान के कोने में बिस्तर पर पड़े बाप को नजरंदाज कर दोनों में शारीरिक संबंध होता है। कोठरी से निकलते वक्त ही लड़की की नजर दरवाजे के पास कोने में पड़े टाट की हरकत पर पड़ती है। बूढ़े को टाट की तरह बेतरतीबी से पड़ा देख वह चीख उठती है। जलील उसकी हया को मुस्कुरा कर टालकर कहता है "कहाँ क्या है रे? कुछ तो नहीं, मेज, कुर्सी, तख्ता टाट ही तो है यहाँ? वह भी कबाड़ का।"[3] हरि भटनागर जी के शब्दों में "इसे वजूद या अस्तित्वहीन कौन करा रहा है यह प्रश्न बढ़ा है। आज के घोर मानवीय समय में स्थितियाँ इतनी मारक और घातक हैं कि इसमें इंसान इंसान नहीं रह पा रहा है। गुस्सा उन स्थितियों पर आता है जिसके दबाव में एक आदमी कितना अश्लील और क्रूर हो

*सहायक आचार्य, हिंदी एवं तुलनात्मक भाषा विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, पोस्ट विद्यानगर, कासरगोड, केरल–671123

Scanned with CamScanner